Chapter 13

हिमालयः

हिमालय

(क) अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराजः।
पूर्वापरौ तोयनिधी वगाह्य स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः ॥1॥

शब्दार्थ — अस्ति — है। उत्तरस्यां — उत्तर से, दिशि — दिशा में, देवतात्मा — देव स्वरूप (जैसा), नाम — नामक, नगाधिराजः — पर्वतों के राजा, पूर्वापरौ — पूर्व तथा पश्चिम में स्थित। तोयनिधी — दोनों समुद्रों को, वगाह्य — घुस-कर / प्रविष्ट होकर, इव — मानो, मानदण्डः — पैमाना / मापक

अन्वयः — (भारतस्य) उत्तरस्यां दिशि हिमालयः नाम देवतात्मा (एकः) नगाधिराजः अस्ति। (सः) पूर्वापरौ तोयनिधि वगाह्य पृथिव्याः मानदण्डः इव स्थितः (अस्ति)।

सरलार्थ — (भारत की) उत्तर दिशा में हिमालय नामक देव स्वरूप / जैसा (एक) पर्वतराज है। (वह) पूर्व और पश्चिम में स्थित दोनों समुद्रों को प्रविष्ट होकर / घुसकर पृथ्वी के मानदण्ड की तरह स्थित है।

maketoss.com

(ख) अनन्तरत्नप्रभवस्य यस्य हिमं न सौभाग्यविलोपि जातम्।
एको हि दोषो गुणसन्निपाते निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवाङ्कः ॥2॥

शब्दार्थ— अनन्त० — अनेक, रत्नप्रभवस्य — रत्नों को उत्पन्न करने वाले हिमं — बर्फ, यस्य — जिस का/के/की, सौभाग्य — शोभा को विलोपि — नाश करने वाली, जातम् — हुआ, एकः — एक, हि — क्योंकि/इसलिए, दोषः — अवगुण, गुणसन्निपाते — गुणों के समूह में, निमज्जति — विलीन/गायब हो जाता है, इन्दोः — चन्द्रमा का किरणेषु — किरणों में, इव — के समान, अङ्कः — धब्बा/कलङ्कः

अन्वयः — हिमं अनन्तरत्नप्रभवस्य यस्य (हिमालयस्य) सौभाग्य-विलोपि न जातम्। हि, गुणसन्निपाते एकः दोषः इन्दोः किरणेषु अङ्कः इव निमज्जति।

सरलार्थ — बर्फ, अनेक रत्नों को उत्पन्न करने वाले जिस (हिमालय की) शोभा को नष्ट करने में (समर्थ) नहीं हुई। क्योंकि गुणों के इकट्ठा होने पर एक अवगुण विलीन हो जाता है, (जैसे) चन्द्रमा के किरणों में उसका धब्बा।

maketoss.com

(ग) आमेखलं सञ्चरतां घनानां छायामधः सानुगतां निषेव्य ।
उद्वेजिता वृष्टिभिराश्रयन्ते शृङ्गाणि यस्यातपवन्ति सिद्धाः ॥3॥

शब्दार्थ— आमेखलं – मध्य भाग तक, सञ्चरताम् – घूमते हुए, घनानाम् – बादलों की, छायां – छाया का, अधः – नीचे, सानुगतां – चोटियों पर गई हुई। निषेव्य – सेवन करके, उद्वेजिताः – घबराए हुए/पीड़ित वृष्टिभिः – वर्षा के द्वारा, आश्रयन्ते – आश्रय लेते हैं। शृङ्गाणि – चोटियों को, यस्य – जिसका/जिसकी, आतपवन्ति – धूप वाली, सिद्धाः – साधू-संत (saints)

अन्वयः— आमेखलं सञ्चरतां घनानां सानुगतां छायां अधः निषेव्य वृष्टिभिः उद्वेजिताः सिद्धाः यस्य आतपवन्ति शृङ्गाणि आश्रयन्ते ।

सरलार्थ— (जिसके) —— मध्य भाग तक घूमने वाले बादलों की चोटियों पर गई हुई छाया का नीचे सेवन करके वर्षा से घबराए हुए साधु-संत लोग जिसकी धूप वाली चोटियों का आश्रय लेते हैं।

makoloss.com

(घ) कपोलकण्डूः करिभिर्विनेतुं विघट्टितानां सरलद्रुमाणाम् ।
यत्र स्रुतक्षीरतया प्रसूतः सानूनि गन्धः सुरभीकरोति ॥५॥

शब्दार्थ— कपोलकण्डूः – कनपटियों की खुजली को, करिभिः – हाथियों के द्वारा विनेतुम् – मिटाने के लिए, विघट्टितानां – रगड़े गए (rubbed), सरल – देवदारु के, द्रुमाणाम् – वृक्षों की, यत्र – जहाँ, स्रुतक्षीरतया – चूते हुए दूध वाला होने से, प्रसूतः – उत्पन्न हुआ, सानूनि – चोटियों को (peaks), गन्धः – सुगंध, सुरभीकरोति – सुगन्धित बनाता है

अन्वयः – यत्र कपोलकण्डूः विनेतुं करिभिः विघट्टितानां सरलद्रुमाणां स्रुतक्षीरतया प्रसूतो गन्धः सानूनि सुरभीकरोति ।

सरलार्थ— जहाँ (अपनी) कनपटियों की खुजली को मिटाने के लिए हाथियों द्वारा रगड़े गए देवदारु के वृक्षों से दूध निकलने से उत्पन्न हुई सुगन्ध चोटियों को सुगंधित कर देती है।

maketoss.com

(ङ) दिवाकरादृक्षति यो गुहासु लीनं दिवाभीतमिवान्धकारम् ।
क्षुद्रेऽपि नूनं शरणं प्रपन्ने ममत्वमुच्चैः शिरसां सतीव ॥5॥

शब्दार्थ – दिवाकरात् – सूर्य से, रक्षति – रक्षा करता है, यः – जो, गुहासु – गुफाओं में, लीनं – छिपे हुए, दिवाभीतम् – दिन में डरे हुए (उल्लू, Kaxaif snake), इव – के समान, अन्धकारम् – अन्धकार को, क्षुद्रेऽपि – नीच/छोटा होने पर भी, नूनं – निश्चित रूप से, प्रपन्ने – आए हुए, ममत्वम् – ममता/अपनापन, उच्चैः शिरसाम् – बड़े लोगों की, सतीव – मानो होने पर

अन्वयः – यः दिवाभीतम् इव गुहासु लीनम् अन्धकारं दिवाकरात् रक्षति (यतः) उच्चैः शिरसां शरणं प्रपन्ने क्षुद्रे अपि सति इव नूनं ममत्वम् (प्रतीयते)।

सरलार्थ – जो दिन में डरे हुए (उल्लू) के समान, गुफाओं में छिपे हुए अन्धकार को सूर्य से बचाता है। (क्योंकि) महान् पुरुषों की शरण में आए हुए नीच/छोटे व्यक्ति पर भी मानो निश्चित रूप से ममत्व प्रकट हो रहा है।

maketoss.com